अँधेरे में रहने वाले जानवर

जिंजर क्लार्क

चित्र: पीट म्यूलर

अँधेरे में रहने वाले जानवर

जिंजर क्लार्क

चित्र: पीट म्यूलर

क्या आपने कभी सोचा है कि
रात में क्या होता है
जब आप सो रहे होते हैं?
जब आप सोते हैं,
तो कई जानवर व्यस्त होते हैं.
कुछ जानवर रात में शिकार करते हैं.
उन्हें निशाचर कहा जाता है.

कुछ जानवर लगभग हर समय अँधेरे में रहते हैं.
कुछ गुफाओं में रेंगते हैं.
कुछ समुद्र की तलहटी में बहुत गहराई पर तैरते हैं.
और कुछ अजीबोगरीब जीव
भूमिगत गुफाओं में छिपे रहते हैं.
आइए जानें कि अँधेरे में रहना कैसा होता है!

अध्याय 1

रात में जागने वाले जानवर

क्या यह अँधेरे में रेंगती हुई बिल्ली है?

नहीं. यह एक जेनेट है.

यह धब्बेदार अफ़्रीकी जानवर

वो बिल्ली जैसा दिखता और व्यवहार करता है.

लेकिन उसका संबंध नेवले से है.

वो केवल रात में ही शिकार करता है.

सूरज ढलने के बाद यह नेवला

एक खोखले पेड़ में अपनी

माँद से बाहर निकलता है.

यह तेज़ी से पेड़ पर चढ़ जाता है.

झपट्टा!

वो नेवला अपने तीखे पंजों से

घोंसले से एक पक्षी को पकड़ लेता है.

एक और अफ़्रीकी जानवर पेड़ों पर शिकार करता है.

बुश-बेबी की बड़ी, गोल आँखें होती हैं

जो उसे अंधेरे में देखने में मदद करती हैं.

उसका नाम इसकी पुकार की आवाज़ से ही पड़ा है.

उसकी आवाज़ मानव शिशु के रोने जैसी होती है.

बुश-बेबी 20 फ़ीट तक कूद सकता है!

उसकी लंबी, रोएँदार पूँछ

संतुलन बनाने में मदद करती है

जिससे वो हवा में उड़ सकता है.

वो बुश बेबी पेड़ों पर उछलता है

और एक छोटी छिपकली पर झपटता है.

बार्न उल्लू दुनिया के अधिकांश
भागों में पाया जाता है.
वो एक मूक शिकारी है,
और उसकी सुनने की क्षमता बहुत अच्छी है.
शिकारियों को ढूँढ़ने और
दूर की आवाज़ें सुनने के लिए
वो अपना सिर घुमाता है.

फुस्स!

यह बार्न (खलिहान) उल्लू चुपचाप नीचे झपट्टा मारता है.
यह अपने पंजों से एक चूहे को पकड़ लेता है.
फिर वो चूहे को अपनी चोंच में दबाकर
वापस खलिहान में अपने घोंसले में ले जाता है.
कुछ खलिहान उल्लू ऐसे घोंसलों का
इस्तेमाल करते हैं जिनका इस्तेमाल
उनके माता-पिता और दादा-दादी ने
उनसे पहले किया था.

बड़ा और सुंदर लूना मॉथ

केवल उत्तरी अमेरिका में रहता है.

यह दुनिया के सबसे बड़े पतंगों में से एक है.

उसके पंखों का फैलाव छह इंच तक होता है.

वो लगभग सूप के कटोरे जितना बड़ा होता है!

यह लूना मॉथ अंधेरे में

किसी दूसरे लूना मॉथ की तलाश में फड़फड़ाता है.

यह केवल रात में ही सक्रिय होता है.

लूना मॉथ केवल एक सप्ताह तक ही जीवित रहता है.

उसे कभी खाना नहीं मिलता!

क्योंकि लूना मॉथ का मुँह नहीं होता है!

यह केवल बच्चे पैदा करने के लिए ही जीवित रहता है,

और फिर वो मर जाता है.

लेकिन वो एक अद्भुत पतंगा है!

बड़े भूरे चमगादड़ दिन में सोते हैं.

वे उत्तरी अमेरिकी गुफाओं में समूहों में रहते हैं.

वे पेड़ों और इमारतों में भी सोते हैं.

वे सबसे बड़े चमगादड़ों में से एक हैं,

उनके पंखों का फैलाव 14 इंच तक होता है.

यह लगभग आपकी भुजा के बराबर है!

रात में, सैकड़ों चमगादड़

एक साथ गुफा से बाहर उड़ते हैं.

वे ऊँची आवाज़ें निकालते हैं

और फिर गूँज सुनते हैं.

इससे उन्हें पता चलता है

कि उनका शिकार कहाँ है.

इसे इको-लोकेशन कहते हैं.

चमगादड़ कीड़ों को सुन रहे होते हैं.

एक चमगादड़ एक घंटे में

एक हज़ार से ज़्यादा कीड़े पकड़ सकता है!

अध्याय 2

गुफाओं में रहने वाले जानवर

कई गुफाओं में रहने वाले जीव सफ़ेद होते हैं.

जिन गुफाओं में वे रहते हैं,

वहाँ इतना अंधेरा होता है कि

उन्हें रंगों की ज़रूरत ही नहीं पड़ती.

उनमें कुछ और भी गायब होता है.

उनकी आँखें नहीं होतीं हैं!

गुफा क्रेफ़िश शायद

लाखों सालों से मौजूद हैं.

लेकिन अब उसके नए प्रकार मिल रहे हैं

क्योंकि लोग नई गुफाओं में खोजबीन कर रहे हैं.

यह क्रेफ़िश अपने लंबे एंटीना का इस्तेमाल

अंधेरे पानी में अपना रास्ता ढूँढ़ने के लिए करती है.

झपट!

यह अपने बड़े आगे के पंजों से खाना पकड़ती है.

अंधी गुफा मछली की आँखें को
जहाँ होनी चाहिए वहाँ सिर्फ काले बिंदु होते हैं.
वो पूरी तरह से अंधी होती है.
हालाँकि अंधी गुफा मछली गुलाबी दिखती है,
लेकिन वास्तव में वो गुलाबी नहीं होती.
उनकी त्वचा साफ़ होती है,
जिससे आप उनके अंदर की
रक्त वाहिकाओं तक को देख सकते हैं.

कुछ वैज्ञानिकों का कहना है
कि अंधी गुफा मछली कुत्ते से भी
ज़्यादा बुद्धिमान होती है!
वो चीज़ों से टकराए बिना
उनके चारों ओर तैरती है.
और ऐसा लगता है कि
वो सीखती और याद रखती है
कि उसकी गुफा में चीज़ें कहाँ पर हैं.
अंधी गुफा मछली को मछलीघर में
पालतू जानवर के रूप में भी
रखा जा सकता है.

अंधी सैलामैंडर सफ़ेद और

बिना आँखों वाली होती है.

उसके लाल पंखदार गलफड़े होते हैं

जो इसे साँस लेने में मदद करते हैं.

कितना अजीब सा जीव है!

यह अंधी सैलामैंडर अपना सिर

इधर-उधर हिलाती है.

यह पानी में हलचल महसूस

करके भोजन ढूंढती है

जो उसे बताती है कि

पास में कुछ और तैर रहा है.

चबाओ!

सैलामैंडर एक छोटा घोंघा खाता है.

अंधी भेड़िया मकड़ी सिर्फ़ हवाई
की गुफाओं में ही रहती है.
गुफाओं में रहने वाली मकड़ियाँ
कई तरह की होती हैं.
वो दिखने में एक सामान्य भूरे
और काले भेड़िए मकड़ी जैसी ही होती है.
लेकिन उनसे सिर्फ़ एक-चौथाई नाप की,
—अन्य भेड़िया मकड़ियों से बहुत छोटी.
और इसकी आँखें भी नहीं होतीं हैं!

यह अंधी भेड़िया मकड़ी दूसरी मकड़ियों
की तरह जाला नहीं बनाती.
वो ज़मीन को छूकर शिकार करती है.
झपट्टा मारती है!
वो एक छोटे से झींगे जैसे जानवर का
पीछा करती है और उसे पकड़ लेती है
जो खुद भी अंधा है.

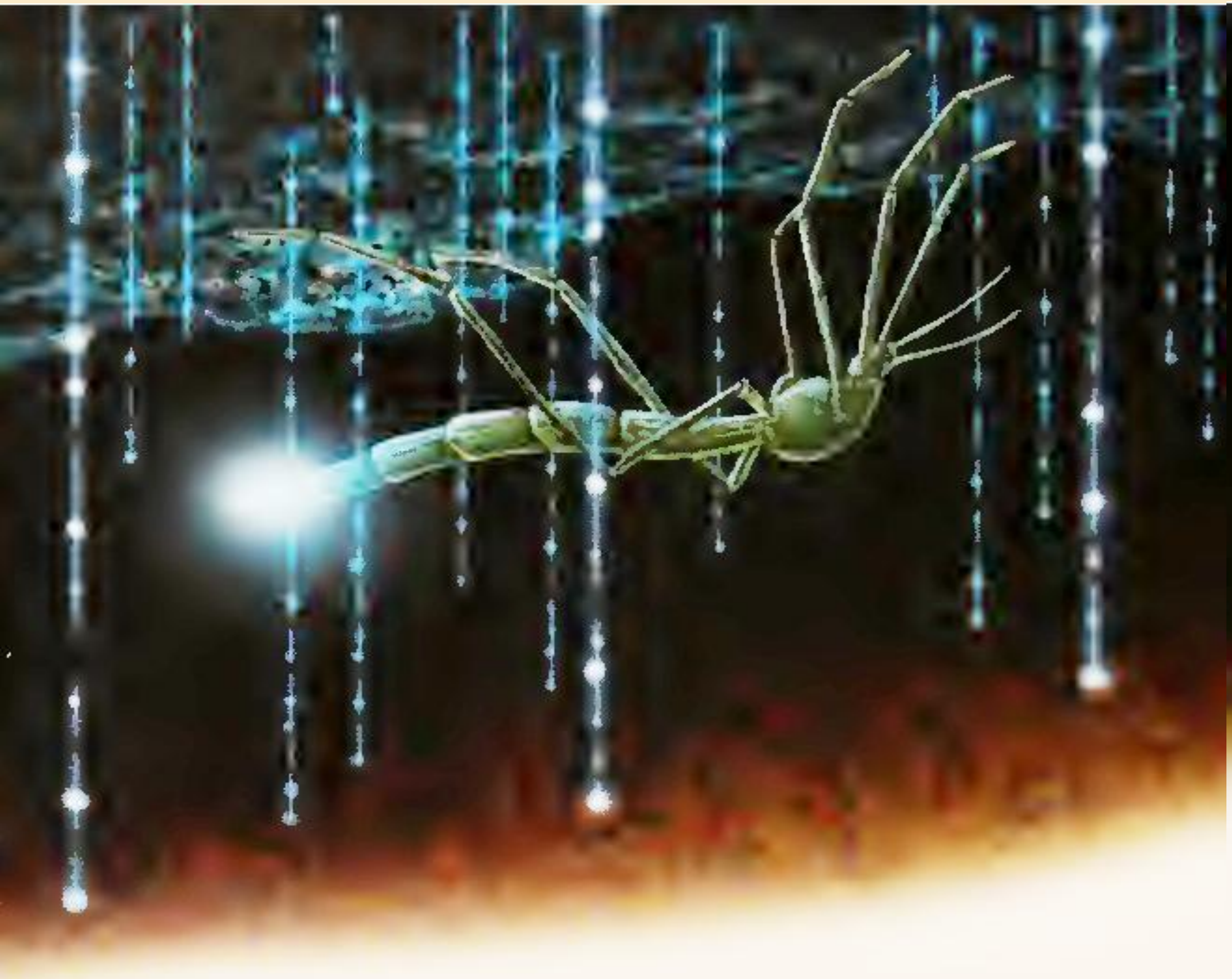

एक अजीबोगरीब गुफा जीव

अंधेरे में चमकता है!

यह जुगनू एक प्रकार की वयस्क मक्खी

का लार्वा है जो न्यूज़ीलैंड की

गुफाओं में रहती है.

यह अपने शरीर के अंदर छोटी

नीली रोशनी पैदा करती है

ताकि शिकार को वो अपने

जाले की ओर आकर्षित कर सके.

यह जुगनू रेशम के धागे बुनता है

जो गुफा की छत से लटकते हैं.

झपट्टा!

एक पतंगा रेशमी धागों में फंस जाता है.

जुगनू उसे ऊपर खींचता है और खा जाता है.

जब जुगनू का पेट भर जाता है,

तो वह अपनी रात की रोशनी

को कम कर देता है.

अध्याय 3

गहरे समुद्र में जानवर

वैम्पायर स्क्विड, स्क्विड से ज़्यादा जेलीफ़िश जैसा है.

उसे यह नाम इसलिए मिला है क्योंकि

उसका काला शरीर और जालीदार बाहें

कुछ-कुछ वैम्पायर चमगादड़ जैसी दिखती हैं.

इसकी बड़ी, डरावनी आँखें भी होती हैं.

यह वैम्पायर स्क्विड एक शार्क को देखता है.

यह शार्क को भ्रमित करने के लिए

अपने सिर पर छोटी-छोटी रोशनियाँ चमकाता है.

वो अपनी बाहों को अपने शरीर पर लपेट लेता है,

लगभग उल्टा होने जैसा.

फुफकार!

फिर स्क्विड अंधेरे में गायब हो जाता है.

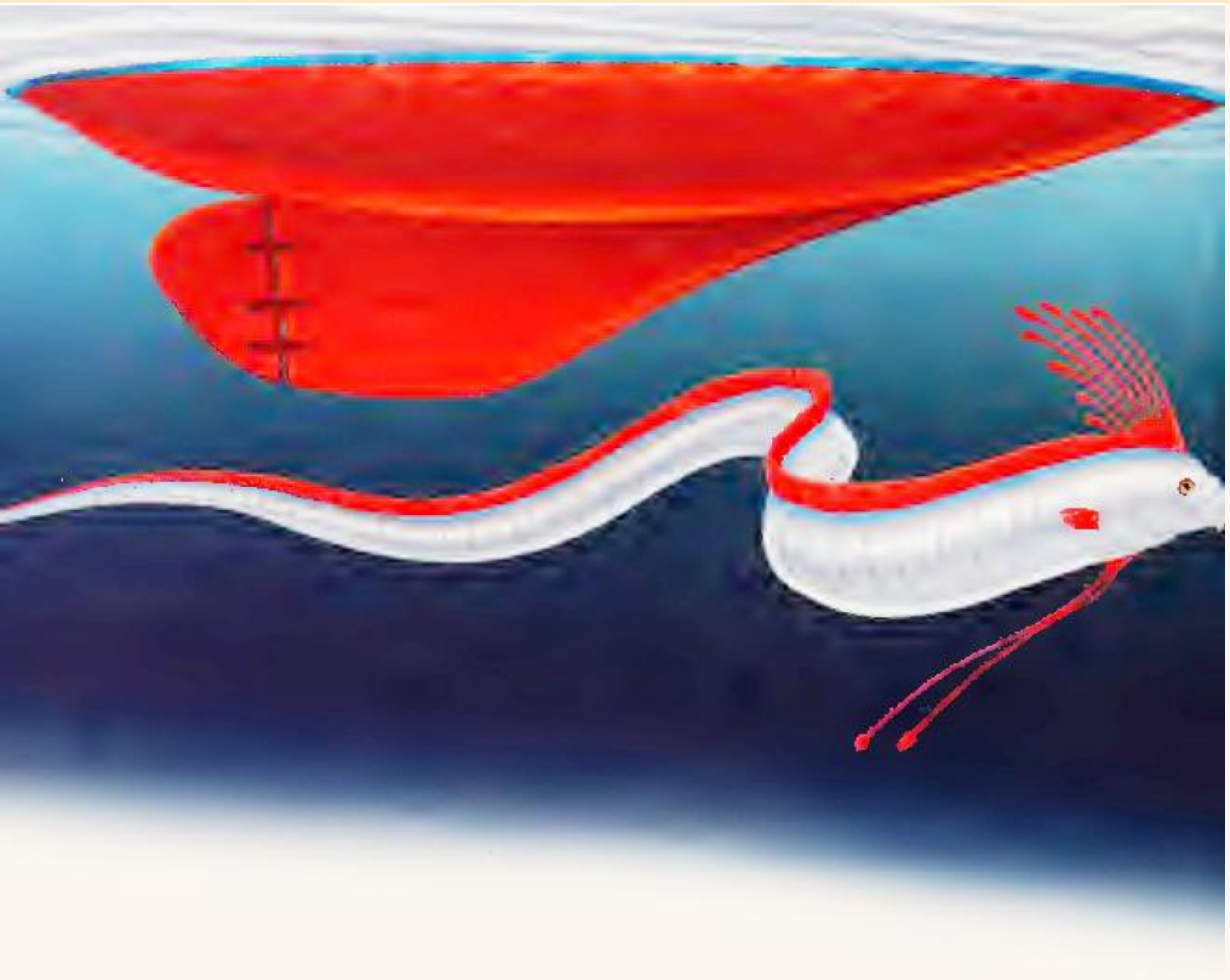

कई सालों से, लोग समुद्री साँपों
के बारे में कहानियाँ सुनाते आ रहे हैं.
वे शायद ओअरफ़िश (चप्पू-मछली)
के बारे में बात कर रहे थे.
उसका लंबा शरीर, नुकीले पंख और
चमकीले लाल रंग की शिखा उसे
समुद्र के एक राक्षस जैसा बनाती है.

चप्पू-मछली (ओअरफ़िश)
हड्डी वाली मछलियों में सबसे लंबी होती है.
ओअरफ़िश 30 फीट तक लंबी हो सकती है.
वो एक नाव जितनी लंबी हो सकती है!
ओअरफ़िश बड़ी होती है, लेकिन उसका
मुँह छोटा होता है और उसके दाँत नहीं होते.
घूँट!
वो ओअरफ़िश एक केकड़े को चूसती है
और फिर चुपचाप चली जाती है.

गल्पर ईल एक

लंबी पूँछ वाले विशाल मुँह जैसी दिखती है.

इसे अम्ब्रेला माउथ (छाता-मुंह) भी कहा जाता है.

वो अपना मुँह चौड़ा करके

अपने से भी बड़ी मछली को खा सकती है.

गल्पर ईल अपनी चमकती पूँछ हिलाती है.

एक मछली वो रोशनी देखती है और

वो गल्पर ईल के मुँह के पास तैरती है

छपाक!

गल्पर ईल मछली को

एक ही बार में निगल जाती है.

स्नाइप ईल लंबी और पतली होती है.

यह पानी में तैरते हुए रिबन के टुकड़े जैसी दिखती है.

वो पाँच फुट तक लंबी हो सकती है.

लेकिन इसका वज़न मुर्गी के अंडे से भी कम होता है.

उसकी चोंच पक्षी जैसी पतली होती है.

चोंच छोटे, नुकीले दांतों से भरी होती है.

यह स्नाइप ईल अपना मुँह खोले हुए

गहरे पानी में सरकती है.

स्वूश! स्वूश!

यह अपनी चोंच में लगे दांतों से

छोटे झींगों को पकड़ने के लिए

अपना सिर इधर-उधर हिलाती है.

वैसे मछलियों के पैर नहीं होते.

लेकिन एक ऐसी मछली है

जो चल भी सकती है!

ट्राइपॉड मछली के तीन मीन-पंख होते हैं,

जिनका इस्तेमाल वह समुद्र तल पर

खड़े होने के लिए करती है.

ट्राइपॉड शब्द का अर्थ होता है "तीन पैर".

ट्राइपॉड मछली समुद्र तल पर

स्थिर खड़ी रहती है.

वह तैरकर भोजन का इंतज़ार कर रही है.

वह अपने पार्श्व मीन-पंखों का इस्तेमाल

पानी में हलचल महसूस करने के लिए

एंटीना की तरह करती है.

एक घोंघा, मछली के मीन-पंख से टकराता है.

ट्राइपॉड मछली घोंघे को

अपने मुँह से पकड़ लेती है

और उसे कुतरती है.

अध्याय 4

भूमिगत जीव

तारे जैसी नाक वाला छछूंदर लगभग अंधा होता है.

यह अपनी नाक पर लगे 22 फीलर्स

का इस्तेमाल करके यह महसूस करता है

कि वह अंधेरे में कहाँ जा रहा है.

तारे जैसी नाक वाला छछूंदर

अन्य छछूंदरों की तरह ज़मीन में खुदाई करता है.

लेकिन वो तैर भी सकता है

और गोता भी लगा सकता है.

वो कीड़े, पानी के कीड़े,

और छोटी मछलियाँ और केकड़े भी खाता है.

तारे जैसी नाक वाला छछूंदर

मिट्टी में अपनी नाक से कीड़ा ढूँढ़ता है.

यह अपने पैरों से कीड़े को उठाता है,

फिर कीड़े को अपने मुँह में डालता है,

और खुदाई करता रहता है.

ज़्यादातर बिज्जू दिन के समय

भूमिगत माँदों में परिवार के समूह में रहते हैं.

उनकी माँद में कई कमरे और सुरंगें होती हैं.

यहाँ तक कि बच्चों के लिए एक नर्सरी भी होती है.

बिज्जू केवल रात में ही बाहर आते हैं.

एक बिज्जू खतरे की तलाश में हवा सूँघता है.

वो भोजन ढूँढ़ने के लिए धीरे-धीरे बाहर आता है.

खुजलाओ! खुजलाओ!

बिज्जू अपने बड़े अगले पंजों से खुदाई करता है.

यह अपनी थूथन से मिट्टी सूँघता है.

बिज्जू - कीड़े, स्लग, कीड़े, मेंढक,

पौधे, फल और छोटे स्तनधारी जीव खाते हैं.

वे खाने में बहुत ज़्यादा नखरेबाज़ नहीं होते!

मैदानी कुत्ता (प्रेयरी डॉग) ज़मीन में बिल बनाते हैं.

कई परिवार एक ही बिल में रहते हैं

और वे पास-पास रहते हैं.

मैदानी कुत्ते काम भी साझा करते हैं.

कुछ खाने के लिए पौधे ढूँढ़ते हैं.

कुछ बच्चों की देखभाल करते हैं.

वे बारी-बारी से पहरा भी देते हैं.

यह मैदानी कुत्ता अपने

परिवार के बिल वाले हिस्से की रखवाली कर रहा है.

तभी एक और मैदानी कुत्ता पास आता है.

वे एक-दूसरे की ओर रेंगते हैं.

वे एक-दूसरे को चूमते हैं!

वे एक-दूसरे को चुम्बनों से पहचान लेते हैं.

अगर मैदानी कुत्ते एक-दूसरे को नहीं जानते,

तो वे तब तक लड़ते रहेंगे

जब तक उनमें से कोई एक भाग न जाए.

चमगादड़ जैसे कान वाली लोमड़ी माँदों में रहती हैं.
वे आमतौर पर रात में शिकार करती हैं,
और उनकी सुनने की शक्ति बहुत अच्छी होती है.
इन लोमड़ियों के कान चमगादड़ जैसे होते हैं
जो अन्य प्रकार की लोमड़ियों के कानों से बहुत बड़े होते हैं.

यह चमगादड़-कान वाली लोमड़ी
अपने बड़े कानों का इस्तेमाल
कीड़ों की आवाज़ सुनने के लिए करती है.
यह मिट्टी में रेंगते कीड़ों की आवाज़ सुन सकती है.
उसे दीमक खाना खास तौर पर पसंद है.
लोमड़ी कुछ दीमकों को उठा लेती है
और अपने छोटे-छोटे दांतों से उन्हें कुतरती है.
वो कितनी मज़ेदार छोटी लोमड़ी है!

ट्रैपडोर मकड़ियाँ चालाक शिकारी होती हैं.

वे ज़मीन में गहरे गड्ढे खोदती हैं.

फिर उन गड्ढों को रेशमी आवरण से ढंकती हैं

और फिर उन पर मिट्टी ढंकती हैं.

इन्हें ट्रैपडोर कहा जाता है.

फिर मादा मकड़ी अपने बिल में इंतज़ार करती है.

वह जीवन भर एक ही बिल में रहती है.

अचानक, उसे बाहर से एक आवाज़ सुनाई देती है.

पॉप!

मकड़ी अपने बिल से बाहर कूदती है

और एक झींगुर को चौंका देती है.

वो झींगुर को पकड़ लेती है

और जल्दी से ज़मीन के नीचे गायब हो जाती है

और झींगुर को ज़हर देकर खा जाती है.

कई प्रकार की चींटियाँ

विशाल भूमिगत समूहों में रहती हैं

जिन्हें कॉलोनी कहते हैं.

शहद चींटियाँ गहरी कॉलोनियाँ खोदती हैं

जहाँ कई सुरंगे और कमरे होते हैं.

ज़्यादातर चींटियों की तरह,

उनकी कॉलोनी में भी

एक रानी और हज़ारों श्रमिक होते हैं.

सबसे बड़े श्रमिकों को

"हनी-पॉट" कहा जाता है.

ये "हनी-पॉट" सुरंग की छत से

एक समूह में लटके रहते हैं.

उनके शरीर गुब्बारों की तरह फूल जाते हैं

ताकि वे फूलों से रस पी सकें.

रस का उपयोग

रानी को

खिलाने के लिए किया जाता है,

जो कभी भी कॉलोनी से बाहर नहीं जाती.

"हनी-पॉट" अंगूर जितने बड़े हो सकते हैं.

वे इतने सूज जाते हैं कि वे हिल तक नहीं सकते!

रात में दुनिया शांत लगती है.

लेकिन कई जानवर फिर भी जागते रहते हैं,

वे अंधेरे में शिकार करते और छिपते हैं.

हू! हू!

इनमें से कुछ जीव शोर करते हैं,

वे बस भोजन की तलाश में होते हैं.

शुभ रात्रि, अंधेरे के जानवरों!

अंधेरे में रहने वाले जानवर

क्या आप जानते हैं कि:

• लूना मॉथ के पंख सूप के कटोरे जितने बड़े होते हैं?

• बड़ा भूरा चमगादड़ अपनी आवाज़ से शिकार करता है?

• जुगनू अपने शरीर के अंदर छोटी नीली रोशनी का इस्तेमाल शिकार को आकर्षित करने के लिए करता है?

इस किताब में अंधेरे में रहने वाले
और भी कई जानवरों के बारे में जानें!

GROSSET & DUNLAP
www.penguin.com/youngreaders